प्रश्न 12. चिन्तन - प्रवाह मे संकलित ‘ चुरू भरि पानि मे ’ कैँ आशय लिखू ।

*उतर - ‘चुरू भरि पानि*मे ’ डॉ0 धीरेंद्र नाथ मिश्रक रचना काल 2003 ई अछि । एहि सम - सामयिक व्यवस्थाक चित्रण कैल अछि । राज्यक अव्यवस्थिक स्थिति - परिस्थितिक वर्णण अछि । ओहि समयक प्रशासनिक व्यवश्था एकदम चरमा गेल छल । किछु उच्चका , लुटेरा सब जगि गेल दल । गिरोह बना क ’ आतंकित करबा लेल , डाक्टर , इंजिनीयर , सेठ , प्रोफेसर सभके अपहरण क ’ फिरौति वसूलैत छल ।

आतंक मे डूबल दिन - राति

लोक सभक दिन बितइ छइ ।

युगक प्रभावें सभ तरि जन - जन

नोर हकन्नें कनइ छइ ॥

प्रशासनिक ढील के कारण लोक दसहत मे जिवैत छल । जकरा घरक किओ कतौ अपह्रत भ ' जाइत छला त ' ओ हकन्न नोरे कनइ छल। मुदा अपराधी हथियारक संग छुट्टा घुमैत छल । कानून के अपना हाथ मे ल क चलैत छल ।

बिहारमे जेना जंगलराज स्थापित भ' गेल अछि । अपराधी नग्न नृत्य करैत अछि । कमीशन खोरी पूर्ण उत्कर्ष पर चल गेल । भोरे - भोरे अखबारमे हत्या , लूट , रंगदारी , डकैती समाचार प्रथमे पृष्ट पर भेटि जाइत छल।